प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- ९६ भोपाल, १६ अक्टूबर, डाक १७ अक्टूबर २०२५ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

धार्मिक कट्टरता संविधान से दूरी है। धर्मनिर्पेक्षता सवैधानिक मजबूरी है।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२९९

कैलाश आदमी

धर्म निरपेक्षता को लेकर आए दिन इस बात पर चर्चा, विमर्श और बहस होती रहती है कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है। केंद्र व अधिकांश राज्यों में सत्तारूढ़ भाजपा अपनी मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से प्रेरणा ग्रहण कर धर्म निरपेक्षता को सर्वधर्म समभाव का विकल्प मानने के लिए तैयार नहीं है। उसके नेता उस समय चुप रहे जब आपातकाल के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संविधान में संशोधन करते हुए उसकी मूल प्रस्तावना में ना केवल धर्म निरपेक्षता बल्कि समाजवाद को भी स्थान दे दिया।

इंदिरा गांधी के शासनकाल के पहले दौर के बाद श्री मोरारजी भाई देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की मिली-जुली सरकार बनी जिसमें भारतीय जनसंघ से जनता पार्टी में विलीन नेता और कार्यकर्ता भी शामिल हुए किंतु इस दौरान धर्म निरपेक्षता और समाजवाद को संविधान में स्थान दिए जाने का विरोध नहीं किया गया तथापि पूर्व जनसंघी नेता धर्म निरपेक्षता और समाजवाद को लेकर मन में खटास पाले रहे। यह सरकार पौने तीन साल ही चल पाई क्योंकि पार्टी के अधिकांश नेताओं का आग्रह था कि जनसंघ से जनता पार्टी में शामिल हुए नेता यह घोषणा करें कि उनका राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसे कट्टरपंथी हिंदू संगठन से कोई संबंध नहीं है। अटल बिहारी वाजपेयी और आडवाणी सहित कोई भी मंत्री और सांसद यह लिखकर देने अथवा संकल्प व्यक्त करने के लिए तैयार नहीं था कि उनका संघ से कोई लेना-देना नहीं है। इस स्थिति में सरकार गिर गई और फिर चुनाव हुए तो श्रीमती इंदिरा गांधी ना केवल दोबारा लोकसभा के लिए चुनी गई बल्कि कांग्रेस को भारी बहुमत प्राप्त हुआ जिससे जनसंघ के नेताओं के साथ संघ के शीर्ष नेतृत्व को भारी निराशा हुई और उन्होंने भारतीय जनता पार्टी नामक नए दल का गठन कर लिया। इस दल को आगे चलकर केंद्र में सरकार बनाने का मौका मिला किंतु इस सरकार के पास इतने मत नहीं थे कि इंदिरा गांधी के शासनकाल में हुए संवैधानिक संशोधन खत्म किए जा सके। यही नहीं आगे चलकर जितनी गैर कांग्रेस सरकारें बनी वे भी संविधान की मूल प्रस्तावना से धर्म निरपेक्षता और समाजवाद जैसे गंभीर मुद्दे को नहीं हटा सकीं। श्री मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने हैं लेकिन भाजपा को लोकसभा में बहुमत प्राप्त नहीं है जिसके कारण बिहार के मुख्यमंत्री नितीश के जनता दल और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चंद्राबाबू नायडू की पार्टी तेलुगु देशम का सहयोग लेकर सरकार चलाना पड़ रही है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना वर्ष १९२५ में हुई थी और विगत विजयादशमी (२ अक्टूबर) के दिन संघ ने नागपुर में मुख्य शताब्दी समारोह आयोजित किया और अन्य कई स्थानों पर प्रादेशिक व स्थानीय स्तर के समारोह आयोजित करने का सिलसिला आगामी विजयादशमी तक चलाए जाने की घोषणा की गई है। जब भी धर्म निरपेक्षता की बात होती है तो संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत सहित सभी प्रचारक यह कहते हुए नहीं थकते कि धर्म निरपेक्ष शब्द अंग्रेजी का है जिसे सेकुलरिज्म (secularism) कहा जाता है जिसका अर्थ धर्महीनता से लिया जाता है। चूंकि संघ और उसकी राजनीतिक संस्था भाजपा के लोग हिंदू धर्म को आधार बनाकर मत कबाड़ते रहे हैं इसलिए वे धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म से निरपेक्ष या दूर अथवा विलग होना ना बताकर धर्म को पंथ के रूप में लेते हैं। चूंकि भारत का संविधान मूलरूप से अंग्रेजी में है इसलिए उसमें सेकुलरिज्म शब्द आया है और संविधान निर्माता इसका अर्थ सर्वधर्म समभाव बताते रहे किंतु जब १९७६ में संविधान के ४२वें संशोधन के वक्त धर्म निरपेक्षता को लेकर जो अभिव्यक्तियां सामने आईं उनमें पूर्व जनसंघ और बाद में बनी भाजपा के लोग अल्पमत में दिखाई दिए जिससे उन्हें चुप्पी साधना पड़ी फिर भी जब भी इस बिंदु पर विमर्श का अवसर मिलता है तब भाजपा और संघ के विचारक कहते हैं कि संविधान का अनुच्छेद १५ (१) धर्म के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है।

संविधान का निर्माण हुआ तब संविधान सभा का गठन श्री राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में किया गया था जिन्होंने संविधान का मसौदा बनाने का काम बाबा साहब आंबेडकर को सौंपा था। मसौदा समिति के प्रमुख के रूप में श्री अंबेडकर ने कहा था कि धर्म निरपेक्ष शब्द व्यापक है। इसका किसी धर्म विशेष से कोई टकराव नहीं है किंतु संविधान की मूल प्रस्तावना में धर्म निरपेक्ष शब्द का प्रकट प्रयोग नहीं मिलता। कुछ व्यवस्थाएं अवश्य ऐसी हैं जो समानता और समान संरक्षण के मौलिक अधिकार धार्मिक स्वतंत्रता और मत-विश्वास की स्वतंत्रता प्रदान करती हैं। १९७६ में धर्म निरपेक्षता शब्द जोड़े जाते समय कहा गया कि यह प्रावधान देश में लोकतांत्रिक गणराज्य और धार्मिक स्वतंत्रता दिए जाने की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम बताया गया।

संविधान वर्तमान और भावी पीढ़ियों का मार्गदर्शन करता है तथा सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय और कल्याणकारी लोक स्वराज्य की दिशा में जो प्रावधान किए गए हैं उन्हीं का परिणाम है कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होते हुए भी भारत में कभी भी ऐसी नौबत नहीं आई जिससे पड़ौसी पाकिस्तान सहित अन्य देशों में हो रहे सैन्य तख्तापलट जैसी घटनाएं हो सकें। हाल नेपाल में बालकिशोर और युवाओं के समूहों ने देश की संविधान सम्मत सरकार का तख्ता पलटने में सफलता प्राप्त की। इसके पूर्व बंगलादेश, म्यांमार श्रीलंका में भी चुनी हुई सरकारों का तख्ता पलट दिया गया तथा जेन जी कहे जाने वाले बाल किशोर-युवाओं के समूहों ने अन्य कई देशों में भी सफलता प्राप्त की है किंतु भारत का संविधान ऐसा है जिसके अंतर्गत ऐसी प्रावधान और व्यवस्थाएं की गई हैं जिससे कभी भी ऐसी नौबत नहीं आई जिससे सेना को तख्ता पलटने का अवसर मिल सके बल्कि सेनाओं ने ना केवल स्वदेश बल्कि अन्यत्र भी संघर्ष या उत्पात की स्थिति में शांतिदूत का काम किया। भारत के संविधान में यह प्रावधान किया गया है कि संसद ही प्रमुख है तथा न्यायालय का स्थान बाद में आता है। जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इंदिरा गांधी के लोकसभायी चुनाव को रद्द किया तब सर्वोच्च न्यायालय तक उन्होंने दस्तक दी किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली जबकि उनका कहना था कि संसद ही सर्वोच्च है। अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

धार्मिक कट्टरता संविधान से दूरी है।
धर्मनिर्पेक्षता संवैधानिक मजबूरी है।।

अंतरराष्ट्रीय साहित्य और सिनेमा उत्सव: हिंदी साहित्यकार मनीषा का सहभाग और सम्मान

निर्दलीय संवाद

नासिक। गुजरात राज्य के अहमदाबाद में 10 वां अंतरराष्ट्रीय लिटरेचर और सिनेमा फेस्टिवल का भव्य-दिव्य आयोजन गत दिनों किया गया। साहित्य और सिनेमा के परस्पर संबंध और अवधारणाओं की प्रासंगिकताओं को केंद्र में रखकर यह आयोजन किया गया था। फेस्टिवल के संस्थापक निदेशक उमाशंकर यादव ने इस फेस्टिवल के आयोजन की सार्थकता के संदर्भ में कहा कि साहित्य और सिनेमा के दर्पण में मानवता के मूल्यों को समझ सकते है। इस आयोजन में उमाशंकर यादव निर्मित सीरीन फिल्म्स द्वारा निर्मित ड्रॉपआऊट फिल्म का ट्रेलर भी रिलिज किया गया।साहित्य और सिनेमा के अनेक परिचर्चा सत्रों का भी आयोजन किया गया।

फेस्टिवल के उद्घाटन सत्र में मनोज अग्रवाल (सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी एवं पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्वास्थ्य विभाग), डॉ. राजेश चंदवानी (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता एवं आईआईएम अहमदाबाद के प्रोफेसर), श्री विजन रावल (संस्थापक, साहित्य मंच, विजन इन्कॉर्प, मीडिया हाइव्स एवं एआई विशेषज्ञ) और फेस्टिवल के संस्थापक श्री उमाशंकर यादव (फिल्म निर्माता, लेखक और उद्यमी),रघुवीर चौधरी,जेडी मजेठियां,पिया बेनेगल आदि उपस्थित थे।

संदौली टाईम्स के संपादक प्रदीप सारंग की अध्यक्षता में कवि संमेलन का आयोजन किया गया।सुप्रसिद्ध कवि सारंग ने मातृत्व के मूल्य का अपनी कविताओं द्वारा वर्णन करके माता-पिता के प्रति संवेदना जगायी।सिनेमा की निर्माण प्रक्रिया की परिचर्चा में बॉलिवूड के प्रसिद्ध गीतकार डॉ.सागर अपनी सहभागिता दर्ज की।

नारी की निर्भीक कलम इस परिचर्चा में दान्वी माली की अध्यक्षता में हिंदी साहित्यकार मनीषा खटाटे, नारीवादी लेखिका शोभा अक्षर और लेखिका कुमुद वर्मा ने सहभाग लिया। मनीषा खटाटे ने नारीवाद को परिभाषित करते हुए नारी की ऐतिहासिकता पर भी प्रकाश डाला।नारी के पारिवारिक तथा सामाजिक मूल्य और अपने स्वत्व तथा अपनी अस्मिता,स्वतंत्रता को स्थापित करने की जिम्मेवारी अपने कंधों पर लेकर नारी अपना अस्तित्व बनाती है। नारी को अपने सृजनात्मक मूल्यों के आयाम में अपनी स्वतंत्रता तथा मूक्ति की राह चूननी चाहिए यह संदेश इस फेस्टिवल के माध्यम से दिया।

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए संस्थापक निदेशक उमाशंकर यादव, प्रदीप सारंग और निरिक्षा कंसारा ने विशेष प्रयास किया।

मुश्किल है 'आदमी' का आदमी होना

मेरे अंदर का मैं
बेताब है
मुझसे बाहर निकलने को...
और मैं
बेचैन हूँ, विवश हूँ,
मजबूर हूँ
उसे अपने ही अंदर
रहने देने को...
क्योंकि मैं
उस के साथ
समझौता नहीं
कर पाऊँगा।
लड़ता है मुझसे
तमाम आदर्शों के लिए
झंझोड़ता है मुझे

यह रचना निर्दलीय प्रकाशन के संस्थापक संपादक श्री कैलाश आदमी पर केंद्रित है

कवि, प्रभात शुक्ला

साथ आने के लिए
और मैं
अपराध बोध से
ग्रस्त हूँ
उसे अपने ही
अंदर दबाए
रखने के लिए।
सोचता हूँ कितने
खुशनसीब हैं वो
जीन के अंदर कोई
मैं नहीं होता
वो स्वयं होते हैं
अंदर भी और
बाहर भी....
अपने आदर्शों,
जीवन मूल्यों
व जीवन
दर्शन के साथ।
वास्तव में
बहुत मुश्किल है
एक आदमी का
आदमी होना।

-निवेदिता निलयम,वर्धा

चिलम की आग

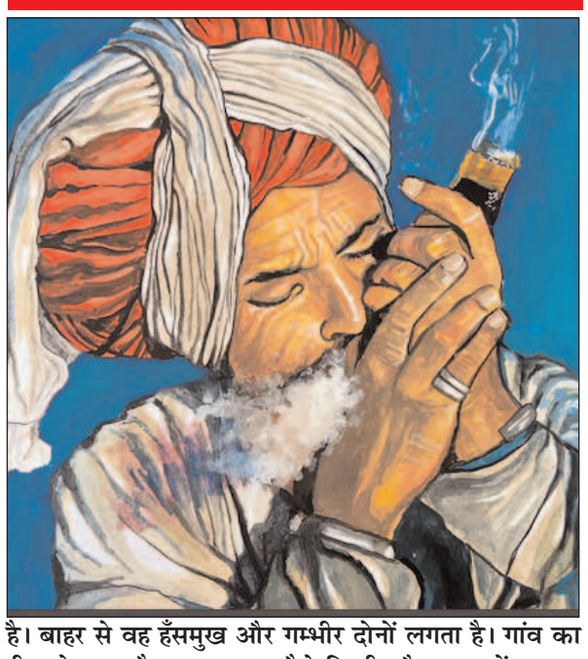

डॉ सुनीता त्रिपाठी

न जाने कैसी हवा चली है आजकल वातावरण में कोई अजीब सी बयार बह रही है। सब कुछ तो है — स्मार्टफोन, आईपैड, स्मार्ट टीवी, हज़ारों चैनल, इंटरनेट, अख़बार, और ढेरों वेब सीरीज़। मनोरंजन की इतनी सामग्री कि आदमी चाहे तो दिन-रात हँसता-गाता रहे पर जाने क्यों, भीतर एक अजीब सी उदासी है। चेहरे पर वो सच्ची खुशी नहीं आती, जैसी कभी पीपल के नीचे बैठने से मिलती थी।

पहले सत्तू पीते थे — करेजा (कलेजा) ठंडा हो जाता था। अब तो महँगी बोतलों में बंद कोल्ड ड्रिंक भी वो ठंडक नहीं दे पाती। जैसे भीतर कुछ सुलग रहा है, कुछ ऐसा जो बुझता ही नहीं। हर आदमी अकेला है, और हर अकेला आदमी भीड़ में गुम है।

बाप-दादा के ज़माने में जात-पात, ऊँच-नीच का भेद बहुत गहरा था। पर जब चिलम जलती थी, और उसके भीतर सुलगती आग चारों ओर घूमती थी — तब सबके हिस्से बराबरी से आती थी। मिश्रिरवाला से लेकर चमरौटी तक, ठाकुर से लेकर नाई तक, सब एक साथ गुड़ गुड़ करते थे। चिलम ने अपने भीतर की आग से सब जातों को एक कर दिया था। किसी का धर्म भ्रष्ट नहीं हुआ, और सबके मन से भेद मिट गया। हंसी ठहाके गूँजते थे, और सबके चेहरे पर गहरा संतोष अपनेपन का भाव चमकता था।

फिर कोई लोक गीत उठता — कोई मंजीरा बजाता, कोई थाली पीटता, और जैसे गांव की आत्मा बोल उठती। संझा ढलते-ढलते सब अपने-अपने घर लौट जाते — थोड़ा थके हुए, पर मन से संतुष्ट। उन्हें अगली सुबह फिर से जात-पात के उसी पुराने खेल में उतरना होता था । शाम की बैठक में सब फिर से एक जात हो जाते थे...चीलम? के भीतर सुलगती आग की जात।

आज वही पीपल का पेड़ खड़ा है, पर उसके नीचे अब न बोरी बिछ्ती है, न चिलम सुलगती है। वहाँ अब कोई नहीं आता... सिवाय एक के।

उसका नाम योगी (सन्यासी जीवन के व्यवहार से विरक्ति) है। बाहर से वह हँसमुख और गम्भीर दोनों लगता है। गांव का ही रहने वाला है — पर मन, जैसे किसी और काल में अटका हो। उसने अपने जीवन में बहुत कुछ खोया नहीं, पर अब तक पाया भी (ज्ञान / जात पात.. का भेद मन से मिटा नहीं पाया) नहीं। योगी की आँखों में प्रेम की एक सूनी तलाश है। वो किसी को नहीं बताता कि उसे किसकी प्रतीक्षा है। पर रोज़ संझा को वही चिलमवाली जगह पर आता है। पुराने पीपल के नीचे बैठता है, जहाँ कभी उसके बाबा रामसनेही बैठते थे।

कभी चुपचाप एक बीड़ी जलाता है, कभी कोई पुराना उदास लोक गीत गुनगुनाता है। पर आजकल न कोई सुनता है, न कोई जवाब देता है। वो कहता नहीं, पर खुद से बुदबुदाता है— मैंने चिलम के धुएँ में गांव को एक होते देखा है... और अब मेरा मन भीतर तक अकेला ही है...

उसे उम्मीद है कि शायद किसी दिन, कोई आएगा — ठीक वैसे ही जैसे उसके बाबा कहते थे, कि सच्चा प्रेम बिना जात, बिना भेद, बिना घमंड के आता है। योगी उसी प्रेम की प्रतीक्षा में है। (गांव में लगने वाले बीते दिनों में चौपाल) योगी अन्दर से रीता (रिक्त) ही रहा सदा पुराने दौर की चाहत में।।

वो ये नहीं चाहता कि चिलमफिर से जले, पर वो यह ज़रूर चाहता है कि वो गर्माहट, वो आत्मीयता, वो साझेपन की आग फिर किसी रूप में जले।

इस बार चिलम नहीं, शायद कोई स्पर्श, कोई संवाद, कोई प्रेम वही आग फिर से सुलगा दे।

एक दिन संझा के झुटपुटे में योगी की आँखें अनायास चमक उठीं। पीपल के नीचे एक हल्की सी आहट हुई। किसी के पायल की मद्धिम झंकार ने उसकी ध्यान-लगी सांसों को तोड़ा।

वो सामने थी। वही, जिसे योगी वर्षों से शब्दों के भीतर ढूँढता रहा — उसकी प्रेमिका। न कोई नाम, न पहचान, पर मन ने पहचाना। तुम अब आयीं? — योगी की आवाज़ में शिकायत कम, विरक्ति ज़्यादा थी।

वो मुस्कराई, एक जानी-पहचानी उदासी के साथ —तुम हर रोज़ मुझे पुकारते थे, पर अपने भीतर ही बंद कर रखा था। मैं आना चाहती थी, पर तुमने ही अपने प्रेम को पुरानी स्मृतियों की चिलमबना दिया।

योगी ने गहरी साँस ली। तब क्या करूँ? जब प्रेम अब गीत नहीं, एकाकी बन चुका है।

प्रेम कभी अकेलापन नहीं होता, योगी, वो बोली, वो तो संवाद है। तुम आज भी पीपल के नीचे आते हो, चुप बैठते हो, बीड़ी सुलगाते हो... पर मुझसे बात नहीं करते।

और तुम? तुमने कभी पुकारा ही कब?

मैं हर उस धुएँ में थी, जो तुम्हारे होंठों से निकली। हर उस खामोशी में थी, जो तुमने खुद से भी छुपा ली।

योगी की आँखें डबडबा गईं। वो कुछ नहीं कह पाया। वह? बस उसके बगल में बैठ गई — चुपचाप। जैसे कोई फिर से बोरी बिछा दी गई हो। जैसे चिलमफिर सुलगने वाली हो, पर इस बार आग भीतर की होगी — साझी, सरल और सच्ची।

योगी हमेशा से ऐसा नहीं था।

वो भी कभी बाकी नौजवानों की तरह था — हँसता, दौड़ता, खेतों में गाता, प्रेम करता हुआ।

उसके जीवन में भी एक वसंत था — नाम था रेवा। रेवा जो गांव के ही मास्टर की बेटी थी। जिसकी हँसी में संगीत था, और जिसकी चाल में नदी की लहरें थीं। जब वो बोलती, तो लगता जैसे आम के बौर में हवा भर गई हो।

और जब गाती, तो गांव की मिट्टी महकने लगती थी।

योगी और रेवा की पहली मुलाकात भी संयोग नहीं, परंपरा थी। पीपल के नीचे किसी की शादी की मंडली में दोनों आमने-सामने बैठे थे। रेवा ने पान थमाया था, और योगी ने पहली बार उसकी आंखों में झाँका था। उस दिन से लेकर कई वर्षों तक — वही पीपल, वही जगह, और वही शामें — दोनों की चुप्पियों में प्रेम की कहानी बहती रहीं। गांव को उनका प्रेम मालूम था, पर गांव चुप था क्योंकि उनकी आँखों में सच दिखता था। सिर्फ जाति अलग थी — योगी ठाकुर था, और रेवा हरिजन (मेरी समझ से प्रभू का अंश ही.. हरिजन है।)पर उनकी आत्माएँ बराबर थीं।

समाज की दीवारें ऊँची थीं।
रेवा की शादी एक शहर के
बाबू से तय हो गई।
योगी ने विरोध किया — खुलेआम।
रेवा ने भी विरोध किया —
घर छोड़ देने तक की ज़िद की।
पर समाज ने ज़मीन की रेखाएं थाम लीं,
और आकाश जितना फैला हुआ प्रेम, बंध गया।
रेवा चली गई — लाल जोड़े में,
विदा होकर, पर आँसू रोककर।
और योगी रुक गया। वहीं, पीपल के नीचे।
जहाँ उनकी पहली बात हुई थी,
जहाँ योगी ने कभी कहा था,
तुम गाती हो तो मेरा भीतर चुप हो जाता है।
अब वही चुप्पी स्थायी हो गई थी।
रेवा ने लौटकर कभी नहीं देखा,
पर योगी ने कभी उसकी जगह
किसी और को नहीं दी।
उसके मन में रेवा अब भी बैठती है —
जैसे चिलम की दहकती आग हो।।

-लखनऊ